ध्येय IAS®
most trusted since 2003

जून | 2024

भारत के किले

परीक्षोपयोगी सारगर्भित नोट्स

सरल व बोधगम्य भाषाशैली का उपयोग

डायग्राम, टेबल व चित्रों का तार्किक उपयोग

ध्येय IAS
योजना ज़िस्ट

भारतीय इतिहास में क़िलों की भूमिका

परिचय

- प्रगैतिहासिक काल से ही , मनुष्यों ने खुद के निवास के लिए , मिट्टी और पत्थर तथा मोर्टार की दीवारों एवं घरों, संसाधनों, पशुधन, धन, जल, किलेबंदी इत्यादि का उपयोग किया है।
- इसके अलावा सुरक्षा प्रदान करने के तरीकों, जैसे किलेबंदी और गढ़ वाली वास्तुशिल्प विशेषताओं में से एक कंटीली शाखाओं, बाड़, बांस, कठोर मिट्टी आदि का विकास भी साथ-साथ हुआ।

क़िलों का एतिहासिक विकास

- क़िले, किलेबंदी और महल भारत की निर्मित विरासत में सबसे बहुल प्रतीकों में से एक हैं। किलेबंदी विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में बनी हैं, जिनका निर्माण विभिन्न राजवंशों द्वारा सदियों से किया गया है।
- इनमें से अधिकांश सल्तनत और मुगल शाही शासन, मराठा साम्राज्य के साथ-साथ क्षेत्रीय राजवंशों राजपूत, सिख, काकतीय, बहमनी, कुतुब शाही या यहां तक कि असम क्षेत्र में अहोम राजवंश के प्रसार को दर्शाते हैं। भारत के तटीय क्षेत्र में कुछ पुर्तगाली और ब्रिटिश युग के किलेबंदी भी हैं।
- प्रारंभिक किलेबंदी और संरक्षित गढ़ों या यहां तक कि भारतीय (और वैश्विक) संदर्भ में साधारण निवास स्थलों के लिए तीन प्रमुख तरीकों का उपयोग किया गया था। एक मिट्टी की प्राचीर का निर्माण था। जिसमें आसपास की सुरक्षात्मक सूखे खंदक या खाइयों से खोदी गई मिट्टी का उपयोग करके किया गया था जिनके किनारे सुरक्षा की आवश्यकता वाले क्षेत्र थे।
- इस तरह के गढ़ वाले शहरों में '16 महा-जनपद' (या सोलह महान राज्यों और गणराज्यों) की राजधानियों के रूप में उल्लेखित स्थल शामिल हैं जैसे पाटलिपुत्र, कोसंबी, उज्जैन (उज्जयिनी), काशी, मथुरा, तक्षशिला (तक्षशिला), आदि। गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में, विशेष रूप से, वर्तमान मथुरा (यमुना नदी पर) से लेकर वर्तमान पटना (गंगा नदी पर) तक फैली हुई कई शहरी बस्तियां देखी गईं।
- 7वीं शताब्दी ई.पू.के भारतीय उपमहाद्वीप में किलेबंद गढ़ और शहर या किलेबंद छावनी, या अर्ध-गढ़ वाले परिदृश्य थे। मौर्य, गुप्त, प्रतिहार, वाकाटक, चोल, पांड्य व आदि राजवंशों के सांस्कृतिक परिदृश्य में पंजाब, सिंध, राजस्थान ने आदि क्षेत्रों में 8वीं शताब्दी के बाद से बने विशाल रक्षात्मक किलों की तुलना में किलेबंद शहर अधिक थे और उन्होंने 10वीं से 17वीं शताब्दी तक एक नया रूप धारण किया।
- अलग-अलग समय अवधि में और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ, पुरातात्विक, वास्तुशिल्प और कला के उदाहरण पूरे भारत में विभिन्न शहर की दीवारों और किलेबंदी के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं।
- 10वीं-11वीं शताब्दी के बाद, राज्यों की राजधानी ने एक किलेबंद शहर की बस्ती के बजाय एक रक्षात्मक किले का रूप लेना शुरू कर दिया। इसके साथ ही, गढ़वाले किले विकसित हुए, जिनके चारों ओर शहर और कस्बे विकसित हुए, जैसा कि दिल्ली, आगरा, लाहौर, ओरछा और पुणे का उदाहरण दिया गया है।
- सल्तनत किलों में से, अहमदनगर में दौलताबाद में दक्कन क्षेत्र के किले, गुलबर्गा (14वीं शताब्दी), बीदर और बीजापुर (15वीं शताब्दी), और गोलकोंडा (16वीं शताब्दी) इस्लामी सल्तनत किलों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।
- इसके अलावा राजपूत, जाट और अन्य उत्तर भारतीय किलों में चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गगरोन, जैसलमेर, अंबर, जोधपुर मेहरानगढ़, बीकानेर जूनागढ़, बूंदी तारागढ़ और अजमेर तारागढ़, ग्वालियर (राजपूत काल भी) मालवा सल्तनत काल आदि शामिल हैं।

निष्कर्ष

- भारत में प्रारंभिक ऐतिहासिक काल से ही ओरछा, आमेर, आदि जैसे कई किलेबंद शहर रहे हैं, साथ ही शहरों के भीतर दीवारों से घिरे पवित्र बाड़े भी हैं। इसी तरह, सुरक्षात्मक दीवारों और द्वारों वाले ऐतिहासिक शहर के साथ कई पूर्व-आधुनिक काल के शहर भी हैं, जैसे कि आगरा, दिल्ली, अहमदाबाद, और जयपुर। कुल मिलाकर, जब किलों और मजबूत विरासत की बात आती है, तो भारत का एक समृद्ध और विविध इतिहास है, जिस पर हमें गर्व है।

आन्ध्रप्रदेश और तेलंगाना के क़िलों का रक्षात्मक वास्तुशिल्प

परिचय

- सामान्य रूप से 'किले' शब्द का प्रयोग वहां रहने वालों की सुरक्षा तथा संरक्षण के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली सुदृढ़ व्यवस्था अथवा मजबूत गढ़ के लिए किया जाता है। किले को संस्कृत में 'दुर्ग' कहा जाता है जिसका अर्थ है वहां पहुंचना दुर्गम होता है या फिर पहुंचना संभव ही नहीं होता।
- तेलुगु में इसे 'कोटा' कहते हैं जबकि कन्नड़ में 'कोटे' और तमिल भाषा में इसे 'कोट्टई' कहा जाता है। हमारे देश में किलों के निर्माण की कला सिंधु घाटी सभ्यता से भी प्राचीन है और उस काल की खुदाई में भी विशाल रक्षा प्राचीरों पर बने निचले किलों और ऊपरी किलों के होने के प्रमाण मिले हैं।
- किलों और संरक्षित शहरों का सबसे प्राचीन उल्लेख मेगस्थनीज़ ने और फिर प्लाइनी ने किया था जिसमें आंध्र देश के शहर और अनेकानेक गांवों का वर्णन है।

कोंडापल्ली

- **कोंडापल्ली** क़िला बहुत विशाल आकार का है जो आंध्र प्रदेश के एनटीआर जिले में पूर्वी घाट की पहाड़ियों पर स्थित है और इसके भीतर दुर्ग दरवाज़ा और गोलकोंडा दरवाज़ों के दो प्रवेश द्वारों से जाया जा सकता है और यह इंडो सारासेनिक अथवा गोर्थिक या नवमुगल शैली में निर्मित है।
- यह किला गजपति के विजयनगर साम्राज्य के अधीन भी रहा था तथा 1530 के शुरूआती दौर में कुतुबशाही शासकों ने इसे सामरिक महत्व का तटवर्ती किला बना लिया। यह किला बाद में कुतुबशाही शासन के कब्जे में रहा, फिर मुगलों ने इसे अपने अधीन कर लिया तथा 1725 ईस्वी में निजाम और 1788 ईस्वी में यह ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया।

उदयगिरि क़िला

- **उदयगिरि क़िला** आंध्र प्रदेश के पीएसआर नेल्लूर जिले में सामरिक उद्देश्य से बनाया गया था तथा शुरू में यह विजयनगर शासन के अधीन था ।
- उदयगिरि किला विजयनगर साम्राज्य की पूर्वी सीमा पर नियंत्रण रखता था। यह किला विजयनगर, गुलबर्गा के बहमनी शासकों और ओडिशा के गजपति शासकों के बीच स्पर्धा का मुख्य कारण था।
- 16 शताब्दी के बाद के वर्षों में इस पर कुतुबशाही का कब्जा हो गया तथा 1839 ईस्वी में इसे ईस्ट इंडिया कंपनी ने जीत लिया।

गूटी क़िला

- **गूटी क़िला** आंध्र प्रदेश के अनन्तपुरम जिले में स्थित सबसे बड़ा किला है। पत्थर की बनी इसकी बाहरी दीवार दो पहाड़ियों को कवर करती है तथा यह सैन्य दृष्टि से अभेद्य रक्षा दीवार है।
- यह समुद्रतल से 224 मीटर की ऊंचाई पर निर्मित है तथा इसकी प्रमुख विशेषता प्राचीरों के भीतर एक लम्बे परकोटे के भीतर बना युद्ध क्षेत्र है। किले के शिखर पर अनाज भंडार (कोठार), बारूद भंडार, भंडारण कक्ष और मैगज़ीन (बंदूकों की) हैं।
- यहां 10वीं शताब्दी के आखिरी वर्षों से 12वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों तक के कल्याण चालुक्यों के बारे में शिलालेख मिले हैं; बाद में 18सदी में इस पर हैदर अली का कब्जा हो गया। लेकिन 1799 ईस्वी में इसे ईस्ट इंडिया कंपनी ने जीत लिया।

पेनुगोंडा फोर्टिस

- **पेनुगोंडा फोर्टिस** आंध्र प्रदेश के सत्य साईं जिले में स्थित है तथा इसमें सात विशाल किले (दुर्ग), एक खाई, चार प्रवेश द्वार, अनेक मन्दिर, कुएं, निगरानी मीनारें और शिखर पर अनाज भंडार हैं।
- इसकी खाइयों की वास्तुकला हम्पी और चंद्रगिरि किलों की वास्तुकला जैसी ही है। इन किलों का प्रारंभिक संदर्भ 14वीं में शताब्दी ईस्वी का मिलता है।
- 15 वीं शताब्दी में और 6वीं शताब्दी के विभिन्न ऐतिहासिक घटनाक्रम के बाद अंततः यह किला 1799 ईस्वी में ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में आ गया।

चंद्रगिरि क़िला

- **चंद्रगिरि क़िला** आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले में अवस्थित है। इसमें निचला किला मैदानी इलाके में और ऊपरी किला उत्तरी दिशा में पहाड़ी पर बना है। ऊपरी किले में पत्थर की सुदृढ़ प्राचीर विष्णु मन्दिर और कृष्ण मन्दिर के अवशेषों को छोड़कर कोई अन्य निर्माण सुरक्षित नहीं था।
- निचले किले में तीन मंजिला 2 भव्य रानी महल और राज महल तथा कुछेक मन्दिर हैं। इसके चारों ओर की लम्बी बाहरी दीवार में आयताकार बुर्ज है और खाई भी है।

गंडिकोटा क़िला

- **गंडिकोटा क़िला** आंध्र प्रदेश के वाईएसआर कडपा जिले में स्थित है। तेलुगु शब्द गंडिकोटा का अर्थ "गहरा खड्डा और किला" होता है। अपने गहरे खड्डे और सुदृढ़ निर्माण के कारण यह किला अभेद्य है जिसकी उत्तरी और पश्चिमी दिशा में पेन्नार नदी बहती है।

वरंगल क़िला

- **वरंगल क़िला** तेलंगाना के वरंगल जिले में स्थित है और काकतीय परम्परा का गौरवपूर्ण प्रतीक माना जाता है।
- पुरालेखों और साहित्य में इनका उल्लेख 'ओरुगल्लु' नाम से किया जाता है। ओरुगल्लु और एकाशिलांगरा उस वक्त प्रमुखता में आया जब हनमकोंडा से राजधानी बदली गई और इसे गणपतिदेव महाराजाओं के शासनकाल में काकतीय साम्राज्य की राजधानी बनाया गया।

भोनगिर क़िला

- **भोनगिर क़िला** तेलंगाना के यदाद्रिभुवनागिरि जिले स्थित है और शुरू में यह काकतीय शासकों के अधिकार में था।
- भोंगिर किला विशिष्ट गिरि दुर्गम शैली का किला है। इसमें एक निचला और एक ऊपरी किला है जिसके हर तरफ तीखी ढलवां पहाड़ी है। इसकी भीतरी दीवारें काकतीय और कुतुबशाही साम्राज्य की अद्भुत वास्तुकला को दर्शाती हैं।

कोइलकोंडा क़िला

- **कोइलकोंडा क़िला** तेलंगाना के महबूबनगर जिले में स्थित है और यह विजयनगर और कुतुबशाही साम्राज्यों का सीमावर्ती किला था।
- इसके धनुषाकार प्रवेशद्वारों पर सजावटी कार्य किया गया है और ऐसे कुल चार प्रवेश द्वार हैं। कमांडर (सेनापति) का आवास, कई अन्य अपार्टमेंट, मैग्जीन, अनाज भंडार और ईदगाह भी इस किले के अवशेषों में प्रमुख हैं।

एल्गंडल क़िला

- **एल्गंडल क़िला** तेलंगाना के करीमनगर जिले में है और इसे वेलिगुंडल भी कहते हैं। इसका निर्माण काकतीय शासनकाल में हुआ था तथा मुसुनुरी नायकों के शासन के दौरान इसकी गिनती सुदृढ़ किलों में होती थी।
- इस किले के चार द्वारों और बुर्जों की वास्तुकला पर कुतुबशाही प्रभाव दिखता है और गोलकोंडा नयाकिला बुर्जों से भी समानता दिखाई पड़ती है। किसी समय ये सभी किले सत्ता के केंद्र रहे और पूरा घटनाचक्र इनके इर्द-गिर्द घूमता था पर आज उन सभ्यताओं के पूर्णतः समाप्तप्रायः हो जाने के बावजूद ये सूचना और जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत बने हुए हैं।

गोलकोंडा: एक अभेद्य किला

परिचय

- मुहम्मद कुली कुतुब शाह दक्कनी ने हैदराबाद की स्थापना की और चारमीनार का निर्माण कराया। बाद में वर्ष 1687 में औरंगजेब ने राज्य पर कब्ज़ा कर लिया था और 1713 में आसिफ जाह को निजाम-उल-मुल्क नाम दिया था। निजाम के उत्तराधिकारी ने 17 सितंबर, 1948 तक हैदराबाद पर शासन किया।

- खाई से सुरक्षित तीन-स्तरीय किलेबंदी और आठ प्रवेश द्वारों वाला यह विशाल किला, मध्ययुगीन दक्कन के दौरान महत्वपूर्ण था। अपने अटूट गढ़ के साथ-साथ, गोलकोंडा किला अपनी सुनियोजित टाउनशिप, मस्जिदों, पत्रिकाओं, हॉल, अंबर खाना, इब्राहिम मस्जिद और शिखर पर बारादरी कुछ महत्वपूर्ण गोलकोंडा संरचनाएं हैं।

कोह-ए-नूर हीरे का इतिहास

- कोह-ए-नूर हीरे की खोज सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब शाह के शासनकाल के दौरान कृष्णा नदी के करीब कोल्लोर में हुई थी। गोलकोंडा को अपने हीरा बाजार के लिए प्रसिद्धि मिली।

गोलकोंडा क़िले की रूपरेखा

- गोलकोंडा की प्राचीर पत्थरों से बनी है और अविश्वसनीय रूप से मजबूत है। इसकी परिधि लगभग पांच मील है।

गोलकोंडा क़िले के द्वार

- यहाँ नौ द्वार या दरवाज़े हैं: (1) फ़तेह दरवाज़ा, (2) मोती दरवाज़ा, (3) नए किले का दरवाज़ा, (4) जमाली दरवाज़ा, (5) बंजारी दरवाज़ा (6) पटनचेरु दरवाज़ा, (7) मक्काई दरवाज़ा, (8) बोदली दरवाज़ा, और (9) बहमनी दरवाज़ा।
- फ़तेह दरवाज़ा क़िले के पूर्व में यह दोहरा द्वार है, जिसे 1687 ई. में अब्दुल्ला खान पन्नी ने औरंगजेब सेना के प्रवेश हेतु खोला था।

क़िले के बुर्ज

- यहां 87 बुर्ज हैं। यहाँ प्राचीर से पांच मील की दूरी पर 48 बुर्ज हैं, जिनमें से (1) पेटला बुर्ज, (2) मोसा बुर्ज और (3) मजनून बुर्ज प्रसिद्ध हैं।

कटोरा हाउस

- यह किले का कुंड है, राजा और अन्य लोग इस कुंड में नौका विहार का आनंद लेते थे, जो दुर्ग टैंक के पानी से भरा होता था। यदि आप पश्चिमी द्वार पर आवाज लगाएंगे तो आवाज तीन बार गूंजेगी ।

धान कोठा या अनाज का गोदाम

- यह एक ऐसी जगह थी जहां अनाज का भंडारण किया जाता था। गोदाम को युद्ध के दौरान भरा जाता था ताकि खाद्य आपूर्ति आयात करने की कोई आवश्यकता न हो।

जामा-ए-मस्जिद

- इस मस्जिद की स्थापना सुल्तान कुली कुतुब शाह प्रथम ने की थी, जिन्होंने 1518 ईस्वी में इसका निर्माण शुरू करवाया था।

मस्जिद-ए-मुल्ला खियाली

- यह मस्जिद नए किले के भीतर स्थित है। इसका निर्माण मुल्ला खियाली ने किया था, जो एक राज कवि था।

बाला हिसार का निर्माण

- बाला हिसार पहाड़ियों के ऊपर स्थित है। कुतुब शाही महल, दरबार-ए-आम (आम सभा), दरबार-ए-खास (विशेष सभा), दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास यहां स्थित संरचनाओं में से हैं।
- बाला हिसार गेट के सामने पर्दानुमा दीवार है। युद्ध के समय इस दीवार के पीछे से दुश्मन की गतिविधियों का पता लगाया जाता था और उन पर नज़र रखी जाती थी।

ध्वनि-विज्ञान

- यदि आप बाला हिसार के द्वार के भीतर मध्य मेहराब के नीचे सीढ़ियों के सामने खड़े होकर ताली बजाते हैं, तो आपको ध्वनि का एक कंपन सुनाई देगा जो बाला हिसार के सबसे ऊंचे हिस्से से शुरू होता है। ध्वनि इस मेहराब के माध्यम से कंपन से आती है।

शव स्नानघर

- शव स्नानघर, जिसका निर्माण तुर्की और फारसी स्नान शैलियों में किया गया था; का उपयोग शाही परिवार के दिवंगत सदस्यों का औपचारिक रूप से स्नान कराने के लिए किया जाता था। स्नानघर का निर्माण गर्म और ठंडे पानी के कुंडों से किया गया था, जिनकी आपूर्ति छिपे हुए टेराकोटा नलिकाओं की एक प्रणाली द्वारा की गई थी।

नगीना बाग

- नगीना बाग, मुख्य प्रवेश द्वार के दाईं ओर एक आनंद उद्यान है, इसका नाम उस उद्यान से पड़ा है जहां हरम की कुलीन महिलाएं विशेष अवसरों पर गहने खरीदती थीं।

दुर्ग टैंक की नहर (दुर्गम चेरुवु)

- यह नहर पूरे किले की बागवानी के लिए सिंचाई प्रणाली के रूप में काम करती थी, और प्रत्येक स्थान पर खेती और बागवानी के लिए अपना स्वयं का सेटअप था।

रामदास जेल

- यह एक आयताकार संरचना है और इसमें एक ही उत्तर प्रवेश द्वार है। अबुल हसन कुतुब (तनाह शाह) के शासनकाल, 1672-1787 ई. के दौरान, यह इमारत- जिसका मूल उद्देश्य एक भंडारगृह के रूप में कार्य करना था को एक जेल में बदल दिया गया था।

बारादरी या आम सभा (दरबार हॉल)

- इस दो मंजिला इमारत में एक दर्शक कक्ष और ऊपरी स्तरों पर खुली छतें हैं। दर्शक कक्ष निचली दो मंजिलों में स्थित हैं, जिन्हें दीवान-ए-खास और दीवान-ए-आम कहा जाता है।

शस्त्रागार या असलाह खाना

- यह एक तीन मंजिला संरचना है जिसमें प्रत्येक स्तर पर अलग-अलग आकार के बंद और खुले मेहराब हैं। संरचना के प्रत्येक स्तर में सात मेहराब हैं, और प्रत्येक स्तर पर दो लघु बंद आर्केड टुकड़े दोनों तरफ दिखाई देते हैं।

शाही महल

- आसपास की इमारतें मुख्य महलों का एक हिस्सा हैं जिन्हें कुतुब शाही राजाओं ने अपनी ज़रूरतों के अनुसार अलग अलग समय में बनवाया था। इनमें दर्शक कक्ष, जनाना मस्जिदें, शाही महल, फव्वारे, टैंक आदि शामिल हैं।

तारामती मस्जिद

- गोलकोंडा किले की सबसे उत्कृष्ट इमारतों में से एक तारामती मस्जिद है, जो महल परिसर के भीतर स्थित है और इसमें तीन मेहराब हैं।

गुजरात के क़िले विरासत और विद्या के संरक्षक

परिचय

- जूनागढ़ के मध्य में स्थित उपरकोट किला प्राचीन इतिहास का गुप्त खजाना है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसका निर्माण 319 ईसा पूर्व में मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त ने करवाया था। चट्टानी इलाके में बना यह किला मौर्य, गुप्त और चूड़ासमा सहित कई राजवंशों के लिए गढ़ के रूप में काम करता था।
- यह किला जूनागढ़ के गौरवशाली अतीत का प्रमाण है; इसके भीतर एक शानदार पुरानी मस्जिद, हजारों साल पुरानी बौद्ध गुफाओं का एक समूह और दो बेहतरीन बावड़ियों जैसे वास्तुशिल्प रत्न मौजूद हैं।

संरक्षण के प्रयासः

- 1893-94 में जूनागढ़ राज्य के दीवान हरिदास विहारीदास ने किले का जीर्णोद्धार करवाया। जुलाई 2020 में, गुजरात सरकार ने किले और उसके अंदर की संरचनाओं के जीर्णोद्धार की पहल की, जिसमें प्राचीन बावड़ियों, प्रवेश द्वारों और किलेबंदी पर ध्यान केंद्रित किया गया।

पावागढ़ चंपानेर क़िला

- चांपानेर शहर के पास ज्वालामुखी पहाड़ी के ऊपर स्थित पावागढ़ चंपानेर किला यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है जो मध्यकालीन गुजरात की सांस्कृतिक विविधता और स्थापत्य कला की शान का प्रमाण है।
- सांस्कृतिक रूप से, पावागढ़ चंपानेर किला इस क्षेत्र की समन्वित विरासत का एक प्रमाण है, जिसकी अपनी वास्तुकला और डिजाइन में हिंदू, जैन और इस्लामी प्रभाव देखने को मिलता है।

- किले की दीवारों के भीतर बना एक प्रतिष्ठित हिंदू तीर्थ स्थल, कालिका माता का भव्य मन्दिर है। गुजरात सल्तनत के महमूद बेगड़ा द्वारा निर्मित भव्य जामी मस्जिद, जटिल इस्लामी ज्यामितीय पैटर्न और सुलेख (कैलिग्राफी) को दर्शाती है।
- वास्तुकला की दृष्टि से, पावागढ़ चंपानेर किला इंजीनियरिंग और शिल्प कौशल का एक अद्भुत नमूना है।
- जुलाई 2004 में, यूनेस्को ने पावागढ़ चम्पानेर पुरातत्व पार्क को विश्व धरोहर सूची में इस औचित्य के साथ शामिल किया था।

दीव क़िला:

- गुजरात के तट से दूर शांत द्वीप पर स्थित दीव क़िला, इस क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत का प्रमाण है।

भद्रा क़िला

- भद्रा किला अहमदाबाद के चारदीवारी वाले शहर क्षेत्र में स्थित है। इसे अहमद शाह प्रथम ने 1411 में बनवाया था। किले को भद्र काली के मन्दिर के नाम पर भद्रा नाम दिया, जिसे मराठा शासन के दौरान स्थापित किया गया था।
- सदियों पहले इस किले को आर्कफोर्ट भी कहा जाता था। अंग्रेजों ने 1817 में किले पर कब्जा कर लिया और आजादी तक इसे जेल के रूप में इस्तेमाल किया। इसे 2014 में अहमदाबाद नगर निगम और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा शहर के सांस्कृतिक केंद्र के रूप में पुनर्निर्मित किया गया था ताकि लोगों को इतिहास की झलक मिल सके।
- वास्तुकला की दृष्टि से, भद्र किला इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। इसमें 14 मीनारें, आठ द्वार और दो बड़े द्वारों सहित एक किलेबंद शहर की दीवार थी। सड़क के दक्षिण की ओर, एक सामूहिक मस्जिद है जिसे जामा मस्जिद के नाम से जाना जाता है।

घंटाघरः

- भद्रा किले की घड़ी लंदन से 1849 में 8000 रुपये की लागत से लाई गई थी और 1878 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 2430 रुपये की लागत से यहां स्थापित की गई थी।
- ये क़िले न केवल सैन्य गढ़ के रूप में बल्कि राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधि के केंद्र के रूप में भी काम करते थे, जिससे व्यापार, वाणिज्य और बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला।
- वे हिंदू, इस्लामी और यूरोपीय प्रभावों के समन्वित मिश्रण के साक्षी हैं जो गुजरात के सांस्कृतिक परिदृश्य की विशेषता है, जो इस क्षेत्र की स्थापत्य शैली, धार्मिक परंपराओं और पाक कला में झलकता है।

दिल्ली में क़िले

परिचय

- विभिन्न इतिहासकारों के विवरणों के आधार पर कहा जाता है कि दिल्ली में 7-11 शहर शामिल हैं। दिल्ली के प्राचीन इतिहास का पता महाभारत की पौराणिक कथाओं से लगाया जा सकता है, जहां पांडवों ने यमुना नदी के पश्चिमी तट पर प्रसिद्ध इंद्रप्रस्थ का निर्माण किया था। कुछ लोगों का मानना है कि यह शहर दिल्ली के पुराना किला स्थल पर मौजूद था, तथा हाल ही में चल रही खुदाई से इस पर प्रकाश डाला जा सकता है।

दिल्ली का किला

- दिल्ली का सबसे पहला किला 11 वीं शताब्दी का माना जाता है, जब तोमर शासक अनंगपाल ने लाल कोट नामक क़िला बनवाया था। बाद में, पृथ्वीराज चौहान ने इसके चारों ओर विशाल प्राचीर बनवाकर किले का विस्तार किया और इस विस्तारित शहर को किला राय पिथौरा के नाम से जाना जाता है, जो दिल्ली के तथाकथित सात शहरों में से पहला है।
- पृथ्वीराज ने 1192 ई. में मुहम्मद गौरी की आक्रमणकारी सेनाओं के हाथों इसे खो दिया था। घुरीद सेनापति ऐबक ने इसके परिसर में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और कुतुब मीनार का निर्माण किया।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान कई किले बनाए गए, जिसने भारत में इंडो-इस्लामिक स्थापत्य शैली की भी शुरुआत की। उस समय का एक उल्लेखनीय किला 14वीं शताब्दी में गयास-उद-दीन तुगलक द्वारा बनवाया गया था। यह किला दिल्ली में तुगलकों द्वारा बनाए गए एक नए शहर का हिस्सा था जिसे तुगलकाबाद कहा जाता था। इसे वास्तव में दोहरे उद्देश्य से बनाया गया थाः मंगोल हमलों के खतरों का विरोध करना और गयास-उद-दीन तुगलक की राजधानी के रूप में कार्य करना।

- दिल्ली के तीसरे शहर का एक हिस्सा तुगलकाबाद, जो 6.5 किलोमीटर में फैला है, 1321 ई. में बनाया गया था। तुगलकाबाद में उल्लेखनीय, विशाल पत्थर की किलेबंदी है जो शहर की अनियमित भूमि योजना को घेरे हुए है।
- इसके बाद मुगलों द्वारा किला-ए-कोहना, नामक एक मस्जिद का निर्माण शेर शाह ने 1541 ई. में करवाया था। इसका प्रार्थना कक्ष आयताकार है, जिसके सामने पांच घोड़े की नाल के आकार के मेहराब हैं।
- यह मस्जिद, मुगल मस्जिद वास्तुकला के विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह मस्जिद इस्लामी वास्तुकला और कलश तथा कमल जैसे स्वदेशी हिंदू शैलीगत रूपांकनों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण प्रस्तुत करती है।
- पुराना किला लाल बलुआ पत्थर से बना एक दो मंजिला अष्टकोणीय मीनार है, जिस पर संगमरमर लगा हुआ है, और इसके ऊपर एक अष्टकोणीय मंडप या छतरी है। इस इमारत को संभवतः हुमायूं ने इसे अपने पुस्तकालय के रूप में इस्तेमाल किया था, जिसमें से वह मुअज़्ज़िन की नमाज़ के लिए पुकारने के जवाब में भागते समय गिर गया और अंततः मर गया।
- लाल दरवाज़ा लाल बलुआ पत्थर और ग्रे क्वार्टजाइट से बना एक भव्य प्रवेश द्वार है, जिसे शेर गढ़ शहर का दक्षिणी प्रवेश द्वार माना जाता है। खैरुल मनाज़िल को अकबर की नर्स माहम अंगा ने 1561-62 के आसपास मस्जिद और मदरसा बनाने के लिए बनवाया था।
- सर एडविन लुटियंस, जिन्होंने अंग्रेजों के लिए दिल्ली की आधुनिक शाही राजधानी का निर्माण किया था, के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने सेंट्रल विस्टा, जिसे अब कर्तव्य पथ कहा जाता है, को पुराना किला के हुमायूं दरवाज़े के साथ संरेखित किया था।

लाल किला

- 1638 में सम्राट शाहजहां द्वारा नई राजधानी शहर शाहजहानाबाद के महल किले के रूप में बनवाया गया और वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी द्वारा डिजाइन किया गया, लाल किला लगभग 200 वर्षों तक मुगल सम्राटों के मुख्य निवास के रूप में कार्य करता रहा।
- लाल बलुआ पत्थर से बना यह किला यमुना के तट पर बनाया गया था और इसे बनने में लगभग नौ साल (1639-1648) लगे थे। लाल किला सलीमगढ़ किले नामक एक पुरानी संरचना के निकट में बना है, जिसका निर्माण 1546 में इस्लाम शाह सूरी के शासनकाल के दौरान किया गया था। यह किला अपनी वास्तुकला के लिए जाना जाता है, जिसमें जटिल नक्काशी, सुंदर गुंबद और विशाल उद्यान हैं।
- लाल किला मुगल, फारसी, तैमूर और हिंदू शैलियों का सहज मिश्रण है। नहर-ए-बेहिस्ट के माध्यम से जुड़े खूबसूरत मंडपों और दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, रंग महल और मोती मस्जिद जैसी संरचनाओं से परिपूर्ण यह महल बीते युग की झलक देता है।
- यूनेस्को के दिशा-निर्देशों के अनुसार इसके उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्व के कारण इस स्मारक को 2007 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था ।

समय के साथ गुंजायमान बेकल, संस्कृति और इतिहास का एक संगम

परिचय:

- अक्सर 'सात भाषाओं की भूमि' कहे जाने वाले कासरगोड का बेकल किला, केरल के सबसे उत्तरी छोर पर, अरब सागर के तट पर स्थित है। यहाँ 16वीं शताब्दी में शिवप्पा नायक द्वारा निर्मित, बेकल किला सदियों से शासकों और साम्राज्यों के बीच संघर्ष का गवाह रहा है।
- पुर्तगाली, मैसूर के सुल्तान और अंग्रेजों सहित कई शक्तियों ने इस किले पर नियंत्रण करने का प्रयास किया है। इसकी गाथा यहां के लोगों द्वारा मलयालम, तुलु, कन्नड़, कोंकणी, उर्दू, मराठी और आकर्षक लिपिहीन भाषा बयारी सहित दस से अधिक भाषाओं के उपयोग में परिलक्षित होती है।

ऐतिहासिक महत्व:

- कभी शक्तिशाली महोदयपुरम साम्राज्य का हिस्सा रहा यह किला 12वीं शताब्दी में कोलाथुनाडु शासन के दौरान एक महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर में तब्दील हो गया। इसकी रणनीतिक और आर्थिक क्षमता के कारण, केलाडी नायक (इक्केरी नायक) ने 16वीं शताब्दी में इस पर विजय प्राप्त कर इसपर शासन किया था।
- उन्होंने न केवल बाहरी हमलों से बचाव के लिए, बल्कि मालाबार में अपने स्वयं के अभियानों की सहायता के लिए भी दुर्जेय बेकल किले का निर्माण किया था। यद्यपि हिरिया वेंकटप्पा ने सर्वप्रथम इस किले के निर्माण की पहल की थी, जो शिवप्पा नायक के काल में पूरा हुआ। इस युग में नायक वंश का साक्ष्य चंद्रगिरी किले का भी निर्माण हुआ था ।
- कालांतर में कोलाथिरियों ने नायक प्रभुत्व को चुनौती दी और यह संघर्ष अंततः हैदर अली के उदय के साथ समाप्त हुआ, जिसने बेकल को मैसूर सल्तनत के अधीन कर दिया। इसके बाद यह किला टीपू सुल्तान के मालाबार अभियान के लिए एक महत्वपूर्ण सैन्य चौकी बन गया। सिक्के और कलाकृतियां जैसी पुरातात्विक खोजें यहां मैसूर सुल्तानों की मज़बूत उपस्थिति की याद दिलाती हैं।

ब्रिटिश शासन से आधुनिक समय तक

- 1799 में टीपू सुल्तान के पतन के साथ, क़िला ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में चला गया। इस अवधि के दौरान, बेकल ने नवगठित बेकल तालुक के मुख्यालय के रूप में कार्य किया। हालांकि, इस समय किले और उसके बंदरगाह का राजनीतिक और आर्थिक महत्व धीरे-धीरे कम होता गया।
- भारत की स्वतंत्रता के बाद, बेकल 1956 में केरल का हिस्सा बन गया। और आज, भव्य बेकल किला भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की देखभाल में है।

इतिहास से परेः सौंदर्य और संस्कृति का मिश्रण

- लगभग 40 एकड़ में फैला बेकल किला लेटराइट पत्थर से बना है, जो कासरगोड जिले में बहुतायत में पाया जाता है। इतिहास और प्रकृति की यह अनूठी टेपेस्ट्री बेकल किले को हर किसी के लिए एक आकर्षक गंतव्य स्थल प्रदान करती है।
- बेकल किले के प्रवेश द्वार पर मुख्यप्राण मन्दिर (हनुमान मन्दिर) है, और पास में एक प्राचीन मस्जिद है। ये स्थल क्षेत्र की सहिष्णुता और धर्मों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के प्रमाण के रूप में कार्य करते हैं।
- कासरगोड का भोजन और खाद्य संस्कृति दक्षिण कर्नाटक से काफी प्रभावित है, जो केरल के बाकी हिस्सों से अलग स्वादों का एक अनूठा मिश्रण पेश करता है।

कासरगोड के किलों की भूमि की यात्रा की योजना बनाना

- कासरगोड, जिसे 'किलों की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है, साथ ही इस किले को सबसे बड़ा किला होने का गौरव प्राप्त है। इसके अलावा यहाँ चंद्रगिरी किला, होसदुर्ग किला, पोवल किला, कुबला किला, कुंडमकुझी क़िला और बेंडादुक्का किला आदि भी विद्यमान हैं।

वेल्लोर किला दक्षिण भारत की महान छावनी

परिचय:

- वेल्लोर किला तमिलनाडु के मध्ययुगीन वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। 16वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य द्वारा बनवाया गया, यह किला रणनीतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। इसका निर्माण चिन्ना बोम्मी नायक और तिम्मा नायक ने किया था, जो विजयनगर साम्राज्य के सम्राट सदाशिव राय के अधीनस्थ थे। तालिकोटा की लड़ाई के बाद इस किले का महत्व और बढ़ गया। 1780 में, वेल्लोर किले को द्वितीय एंग्लो मैसूर युद्ध के दौरान हैदर अली द्वारा पुनः डिजाइन किया गया था।

विजयनगर साम्राज्य के अधीन

- तालिकोटा की लड़ाई के बाद चंद्रगिरि को उनकी चौथी राजधानी के रूप में विजय नगर शासन की पुनर्स्थापना के बाद किले को रणनीतिक महत्व मिला। वही अरविदु राजवंश, जिसके पास 17वीं शताब्दी में रायस की उपाधि थी, इस किले में निवास करता था और इसे 1620 के दशक में तोपपुर के युद्ध में सैन्य अड्डे के रूप में इस्तेमाल किया गया था।

बीजापुर और मराठा काल

- 1640 के दशक में, श्रीरंगा राय तृतीय के शासनकाल के दौरान, तुर्क-फारसी बीजापुर सुल्तानों और मदुरै के नायकों सहित जिंजी में अपने अधीनस्थों के साथ इस किले पर बीजापुर सेना द्वारा कुछ समय के लिए कब्जा कर लिया गया था, लेकिन अंततः तंजौर के नायकों की मदद से इसे फिर से जीत लिया।
- 1614 ईस्वी में श्रीरंगा राय के शासनकाल के दौरान, शाही परिवार के भीतर एक तख्तापलट हुआ, और शासक सम्राट श्रीरंगा राय और उनके शाही परिवार की, शाही परिवार के प्रतिद्वंद्वी गुटों द्वारा हत्या कर दी गई। उनके छोटे बेटे रामदेव राय को तस्करी करके किले से बाहर लाया गया। इन घटनाओं के कारण 1616 ईस्वी में तोपपुर की लड़ाई हुई।
- 1676 ईस्वी में, महान मराठा राजा शिवाजी के अधीन मावलाओं ने पहले तंजौर पर कब्जा कर लिया और शिवाजी के भाई एकाजी को अपना शासक नियुक्त किया। बाद में, उन्होंने 1677 ईस्वी में जिंजी किले पर कब्जा कर लिया, लेकिन वेल्लोर पर हमला करने का काम अपने अधीनस्थों पर छोड़ दिया। 1678 ई. में, एक लम्बी घेराबंदी के बाद, वेल्लोर मराठों के हाथों में चला गया।

मुगलों के अधीन (1707-1760 ई.)

- 1707 ई. में, मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद, दाऊद खान के नेतृत्व में दिल्ली सेना ने मराठों को हराने के बाद वेल्लोर किले पर कब्जा कर लिया। 1710 में, सआदत उल्ला खान के अधीन स्थापित आर्कोट के नवाब ने आदेश का पालन किया और 1733 में बाद के उत्तराधिकारी दोस्त अली ने अपने एक दामाद को वेल्लोर किला उपहार में दे दिया।

अंग्रेजों के नियंत्रण में (1799-1947 ई.)

- मदुरै नायकों के पतन के बाद और मद्रास तट पर अंग्रेजों के उद्भव के साथ, नवाब और उनके दामादों के बीच संघर्ष हुआ। नवाब को अंग्रेजों और प्रतिद्वंद्वी दावेदारों को फ्रांसीसियों का समर्थन प्राप्त था, जिसके परिणामस्वरूप कर्नाटक युद्ध हुआ। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपेक्षाकृत आसानी से वेल्लोर किले पर कब्जा कर लिया और 1947 में भारतीय स्वतंत्रता तक किले को एक प्रमुख छावनी के रूप में इस्तेमाल किया।

वेल्लोर विद्रोह (1806-1807 ई.)

- यह अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय सैनिकों द्वारा बड़े पैमाने पर किया गया पहला विद्रोह था, जिसने 1857 के विद्रोह के लिए मंच तैयार किया। हालांकि, यह अल्पकालिक था और केवल एक दिन तक चला, यह हिंसक और खूनी था और विद्रोहियों ने 200 ब्रिटिश सैनिकों को मार डाला, जिसके परिणामस्वरूप किले में 10 जुलाई, 1806 को लगभग 100 विद्रोहियों को मार डाला गया।
- वेल्लोर विद्रोह एक नृशंस मसला था, जिसमें ब्रिटिश और देशी सिपाहियों दोनों ने न्याय के लिए लड़ाई लड़ी थी। हालांकि 10 जुलाई, 1806 को, औपनिवेशिक रॉबर्ट गिलेस्पी (1766-1814) की त्वरित प्रतिक्रिया के कारण वेल्लोर विद्रोह तेजी से नष्ट हो गया था। विद्रोह का मूल कारण जनरल एग्न्यू (एग्न्यू पगड़ी) द्वारा पेश किए गए सामान्य आदेश का कार्यान्वयन था, जिसमें नए स्थायी नियम प्रकाशित किए गए थे।
- मद्रास सेना के इस नए नियमों में देशी सैनिकों को अपने चेहरे पर जाति के निशान लगाने या परेड में बालियां या मूछें दिखाने से सख्ती से प्रतिबंधित कर दिया गया था। हालांकि सेना में उनका समान रूप से पालन नहीं किया गया था और प्रत्येक रेजिमेंट को अपने स्वयं पर छोड़ दिया गया था। नए आदेश ने इस अस्पष्टताओं को दूर किया और एकरूपता को लागू करने का प्रयास किया।
- नए विनियमन से शुरू में देशी सैनिकों (हिंदुओं और मुस्लिमों) में सामान्य असंतोष पैदा हुआ, क्योंकि निर्माण सामग्री के रूप में चमड़ा प्रयोग होता था। इस प्रकार हिंदुओं और मुसलमानों दोनों की भावनाएं प्रभावित होती थी क्योंकि चमड़े को दोनों समुदायों को प्रदूषित करने वाला माना जाता था।

- इसके अलावा, नया हेड गियर रेजिमेंटों में स्पष्ट रूप से 'नीच' और 'अर्ध-जाति' ड्रमर्स द्वारा पहने जाने वाले सामान था। 6 मई 1806 को, दूसरी बटालियन, चौथी रेजिमेंट के सिपाहियों ने नई एग्न्यू पगड़ी पहनने से मना कर दिया।
- आखिरकार, 10 जुलाई 1806 को, बड़ी संख्या में देशी सिपाहियों और अधिकारियों ने वेल्लोर क़िले में तैनात यूरोपीय सैनिकों और उनके श्वेत अधिकारियों पर हमला कर दिया। इस बीच, विद्रोहियों ने टीपू सुल्तान के पुत्र फतेह हैदर को अपना नया शासक घोषित किया। लेकिन कर्नल गिलेस्पी द्वारा इस विद्रोह का खूनी अंत हुआ।
- टीपू सुल्तान के बेटे को कलकत्ता (कोलकाता) भेज दिया गया। कमांडर-इन-चीफ जनरल क्रैडॉक और मद्रास के गवर्नर विलियम बेंटिक को ब्रिटिश सरकार द्वारा वापस बुला लिया गया था। अंग्रेजों के खिलाफ देशी सिपाहियों द्वारा वेल्लोर विद्रोह बड़ी विफलता के साथ समाप्त हुआ। इसका मुकी कारण उचित नेतृत्व का अभाव और इसे भारतीय मूल के सिपाहियों द्वारा संगठित नहीं होना था।

वेल्लोर किले में पर्यटक आकर्षण

- यह किला पूरी तरह से ग्रेनाइट पत्थर से बना है, जिसे आर्कोट और चित्तूर से आयात किया गया है। यहाँ जलकांतेश्वर मन्दिर का निर्माण विजयनगर साम्राज्य द्वारा किया गया था। साथ ही क़िले के अंदर कई कांस्य मूर्तियां हैं और इसे 1806 में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह के दौरान एक गुप्त हथियार भंडार के रूप में इस्तेमाल किया गया था।
- क़िले परिसर के अंदर विभिन्न महल तीन मुख्य शासकों को समर्पित हैं- टीपू महल, बेगम महल और खांडी महल। इन महलों में एक बहुत ही भव्य आंतरिक वास्तुकला है जो सुल्तानों द्वारा जीनेवाली जीवन शैली को दर्शाती है।
- इसके अलावा यहाँ सेंट जॉन चर्च और मस्जिद आदि विद्यमान हैं। किले की एक अन्य विशेषता यहाँ स्थित भारतीय पुरातत्व संग्रहालय है। इन पर्यटक प्रतिष्ठानों के अलावा, यहाँ के कुछ अन्य पर्यटक स्थल निम्नलिखित हैं:
  - श्रीपुरम स्वर्ण मन्दिर (किले से 15 कि.मी. दूर)
  - मुथु मंडपम (किले से 3 कि.मी. दूर)
  - अमिरिथी जूलॉजिकल पार्क (किले से 25 कि.मी. दूर)
  - अरमामलाई गुफा चित्रकारी (किले से 65 कि.मी. दूर)
- भारत सरकार ने वेल्लोर विद्रोह की 200वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक डाक टिकट जारी किया, जिसे तमिलनाडु सरकार द्वारा प्रदर्शित किया गया था। इस किले का प्रबंधन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है।
- इसमें प्राचीन से आधुनिक समय तक का एक विविध संग्रह है, जिसमें नृविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूविज्ञान, मुद्राशास्त्र, प्रागैतिहासिक अध्ययन और प्राणीशास्त्र संग्रहालय हैं।

इस प्रकार वेल्लोर किला भारतीय इतिहास और वास्तुकला का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका रणनीतिक महत्व और इसके भीतर के ऐतिहासिक स्थल इसे एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनाते हैं। वेल्लोर का किला, अपने समृद्ध इतिहास और भव्य संरचना के साथ, तमिलनाडु के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसका ऐतिहासिक महत्व विजयनगर साम्राज्य से लेकर अंग्रेजों के काल तक विस्तृत है। यह किला पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है और भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मध्यकालीन बंदरगाह और किले

परिचय:

- महाराष्ट्र के तटीय क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण किले और बंदरगाह स्थित हैं। ये किले सह्याद्री पर्वत श्रृंखला से निकलने वाली नदियों के मुहाने पर बने हैं, जहां ये नदियां अरब सागर में मिलती हैं और खाड़ियां बनाती हैं। इन किलों का निर्माण तटीय सुरक्षा और व्यापारिक गतिविधियों की निगरानी के लिए किया गया था।

फील्डवर्क और अन्वेषण:

- रायगढ़ इलाकों के किलों फील्डवर्क और अन्वेषण पर आधारित है। यहाँ कुछ पारंपरिक तकनीकों का उपयोग किया गया, जैसे सर्वेक्षण मानचित्र और गांव-दर-गांव अध्ययन। हालांकि, भूभौतिकीय सर्वेक्षण और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर जैसे आधुनिक उपकरणों

की मदद से परिणामों की सटीकता का स्तर बढ़ गया है। उत्खनन एक अन्य उपयोगी पद्धति है जो तटीय स्थलों के बारे में नया डाटा प्रदान कर सकती है।

महाराष्ट्र के पश्चिमी तट पर व्यापार और बंदरगाह

- महाराष्ट्र के उत्तरी कोंकण तट पर सोपारा, संजान, चौल, ठाणा और कल्याण जैसे प्रमुख बंदरगाह थे। ये बंदरगाह पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्र थे। चौल, जिसे प्राचीन काल में चेमुला कहा जाता था, का उल्लेख पांचवीं शताब्दी के कन्हेरी शिलालेखों में मिलता है।
- सिलहारा राजा अनंतदेव (1094) के एक ताम्रपत्र अनुदान में, चौल में बंदरगाह की स्थिति शूर्परका (सोपारा) और श्रीस्थानका (ठाणा) के समान थी। इसके बाद, मसूदी (915), मुहालहिल (941), अल इस्तखरी (950), इब्न हकल (976), अल बिरूनी (1030) और अल इदरीसी (1130) जैसे कई अरब यात्रियों के यात्रा वृत्तांतों में चौल का उल्लेख या तो सैमुर या जैमूर के रूप में किया गया है।
- बाद की शताब्दियों में, निकितिन (1470), बारबोसा (1514), फिच (1584) और अन्य कई यूरोपीय यात्रियों ने भी चौल का दौरा किया। इब्न बतूता के अनुसार, पश्चिमी तट पर मुस्लिम व्यापारियों और नाविकों की बस्तियां देखी गई, साथ ही मस्जिदों की संख्या भी बढ़ती गई। मार्को पोलो (1290) बताते हैं कि यद्यपि एक हिंदू राजा ने मालाबार क्षेत्र पर शासन किया था फिर भी व्यापारिक गतिविधियां अरब के व्यापारियों द्वारा नियंत्रित थी ।

मध्यकालीन बंदरगाह और व्यापारिक गतिविधियाँ

- मध्यकाल में, निजाम शाही, आदिल शाही और बहमनी जैसे प्रमुख राजवंशों के बीच आंतरिक व्यापार और विदेशी व्यापारिक केंद्रों के माध्यम से अन्य देशों के साथ व्यापार होता था। वसई, कल्याण, चौल और दांडा राजपुरी जैसे बंदरगाह महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे।
- ठाणा बंदरगाह गुजरात के सुल्तान और निजाम शाह राजवंश के अधीन था। मालाबार ने औषधियां, मोम, ताड़ की चीनी, एमरी पत्थर तथा तांबे का निर्यात किया और कपास, चावल, गेहूं तथा बाजरा का आयात किया।
- चौल और दाभोल से गुजरात के दीव तक मलमल और बुने हुए सूती तथा रेशमी कपड़ों का निर्यात किया जाता था। मांडला बंदरगाह पर मसालों और तांबे की वस्तुओं जैसे सामान का आयात किया जाता था। सावित्री खाड़ी के मुहाने पर स्थित बागमंडला (मांडला) बंदरगाह पर कई क्षेत्रों से मसाले, तांबा, चांदी, नारियल और सुपारी आती थी, क्योंकि दक्कन के व्यापारियों से इनकी मांग अधिक होती थी।
- 15वीं शताब्दी में पुर्तगाली अपने जहाजों की बेहतर गुणवत्ता, प्रौद्योगिकी, सैन्य शक्ति और दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण अरबों पर हावी हो गए। परिणामस्वरूप, भारतीय मुसलमानों और अरबों ने तट पर अपना वर्चस्व खो दिया और उनकी जगह पुर्तगाली, ब्रिटिश और डच ने ले ली।

रायगढ़ जिले में बंदरगाह और क़िले

- **कुंडलिका खाड़ीः चौल का बंदरगाह और क़िला**
  - चौल और रेवदांडा दो अलग-अलग क़िले हैं जो इस क्षेत्र में स्थित हैं। चौल किला आगरकोट के नाम से भी जाना जाता है, हालांकि किसी भी साहित्य में इस नाम का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। ऐतिहासिक दस्तावेजों में चौल किले का मूल नाम राजकोट था। किले का मुख्य प्रवेश द्वार चौल के कटकर अली क्षेत्र की सीमा पर स्थित है। ऊपरी और निचली चौल को आज आमतौर पर क्रमशः चौल और रेवदांडा कहा जाता है।
- **चौल में अन्वेषण**
  - पुरातात्विक साक्ष्य अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार में प्रमुख बंदरगाह के रूप में चौल के महत्व की पुष्टि करते हैं जो लगभग दो सहस्राब्दियों तक निरंतर संचालन में था। राजकोट किला बंदरगाह में व्यापारिक कार्यों की सुरक्षा के लिए बनाया गया था। भारत के पश्चिमी तट पर प्रमुख बंदरगाह के रूप में मंबई के उदय के बाद चौल और दाभोल जैसे कई छोटे बंदरगाहों ने धीरे-धीरे विदेश व्यापार की दृष्टि से अपना महत्व खो दिया।

   - चौल बंदरगाह के पतन का एक और अधिक महत्वपूर्ण कारण, कुंडलिका नदी के उत्तरी तट पर गाद जमा होना था। नदी के मुहाने पर पानी का स्तर कम हो गया, जिससे बड़े जहाज बंदरगाह के नज़दीक, यानी मस्जिद क्षेत्र के करीब नहीं जा सकते थे। इसके परिणामस्वरूप चौल और कुंडलिका नदी के बीच अब केवल मैदान ही शेष है।
- **रेवदांडा**
   - रेवदांडा किला कुंडलिका नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। रेवदांडा एक तटीय किला है जो तीन तरफ से समुद्री पानी से घिरा है जबकि जमीन का हिस्सा गहरी खाई से सुरक्षित है। क़िले के अंदर विभिन्न संरचनाओं का निर्माण 1520 और 1721 के बीच किया गया था।
   - यहाँ एकमात्र पांच मंजिला टावर का निर्माण, समुद्र की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए पश्चिमी किले की दीवार के पास किया गया था। वेनिस के व्यापारी यात्री मार्को पोलो के अनुसार, चौल मुख्यतः एक मुस्लिम शहर था, जबकि रेवदांडा एक पुर्तगाली शहर था।
- **कोरलाई**
   - कोरलाई क़िला कुंडलिका खाड़ी के मुहाने पर स्थित है। इसमें ग्यारह प्रवेश द्वारों में से एक के माध्यम से प्रवेश किया जा सकता है, जिनमें से चार बाहरी ओर तथा सात अंदर की ओर हैं। अहमदनगर के बुरहान निजाम शाह ने 1521 में पहाड़ी की चोटी पर एक मजबूत किला बनवाया। उसके बाद 1594 में इस पर पुर्तगालियों ने कब्जा कर लिया। इस किले का पुनर्निर्माण 1646 में डी फेलिप मैस्करेन द्वारा किया गया था। अंततः, अंग्रेजों ने 1818 में किले पर कब्जा कर लिया।

हिंटरलैंड क़िले

- **बिरवाड़ीः**
   - बिरवाड़ी किला रोहा से सह्याद्रि मुख्य शृंखला के लंबवत चलने वाली पहाड़ी श्रृंखला पर स्थित है। जब छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1657 में जंजीरा किले पर कब्जा करने की कोशिश की, तो सिद्दी शासक जंजीरा से पीछे हट गए। उस समय छत्रपति शिवाजी ने लिंगाना और बिरवाड़ी किलों का निर्माण करवाया था।
- **अवचितगढ़ः**
   - अवचितगढ़ में निर्मित किला कुंडलिका नदी के उत्तर में स्थित है। इस किले का निर्माण छत्रपति शिवाजी महाराज ने करवाया था। फरवरी 1818 में, एक ब्रिटिश अधिकारी, कर्नल प्रोथर ने सुरगढ़, सारसगढ़ और सुधागढ़ जैसे अन्य किलों के साथ अवचितगढ़ पर कब्जा कर लिया था।
- **रोहा**:
   - यह मूल रूप से कुंडलिका नदी पर दूसरे दर्जे का एक बंदरगाह है। इसका उपयोग आमतौर पर व्यापारियों द्वारा वस्तुओं के आयात और निर्यात के लिए किया जाता था।
   - यहाँ से निर्यात की जाने वाली महत्वपूर्ण वस्तुएं लकड़ी, नमक, मछली और चावल थीं। लकड़ी, मुंबई और रत्नागिरी से आने वाले व्यापारियों को नीलाम किया जाता था।

मंदाड खाड़ी पर स्थित क़िले

- **जंजीरा क़िलाः**
   - दांडा राजपुरी के पास मंदाड खाड़ी के मुहाने पर अवस्थित यह किला एक प्रमुख व्यापारिक बंदरगाह और केंद्र था।
   - 1490 में, मलिक अहमद ने निजाम शाही राजवंश की स्थापना की और अंततः किले पर कब्जा कर लिया। यूरोपीय यात्री क्लैंस एटीनरी के अनुसार, 1526 में एबिसिनियन कमांडर पेरिम खान ने यह किला कोलिय जाति से छीन लिया था।
   - इस स्थान को दांडा राजपुरी गांव में निकटतम खदान से खोदी गई स्थानीय चट्टान यानी बेसाल्ट का उपयोग करके बनाया गया था।

- **तड़ा और घोसाळाः**
    - मंदाड खाड़ी के अंत में स्थित जंजीरा की तुलना में तड़ा और घोसाळा दो छोटे किले हैं। मध्ययुगीन काल के दौरान तड़ा एक बाजार और दूसरे दर्जे का एक बंदरगाह था।

ऐतिहासिक विवरण:

- ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार 1312 में मलिक काफूर ने दाभोल बंदरगाह पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया। उसके बाद, उत्तरी कोंकण तट महिकावती राजवंश के राजा बिंब के नियंत्रण में था।
- मध्यकाल में दाभोल और चौल के बंदरगाह देवगिरि के यादवों के प्रभाव में आ गए, लेकिन गहने जंगलों के कारण मुगलों और यादवों के लिए कोंकण क्षेत्र पर कब्जा करना मुश्किल था। इसलिए, उन्होंने कोंकण में सड़कों का निर्माण किया और केवल उन मार्गों पर नियंत्रण रखने की कोशिश की जो व्यापारिक बंदरगाहों और बाजारों को जोड़ते थे ।
- 15वीं शताब्दी के अंत में, 1498 में पुर्तगाली व्यापारियों ने अरब सागर में प्रवेश किया और अरबों से व्यापार छीनने की कोशिश की; परिणामस्वरूप, क्षेत्र में व्यापार पर अरबों का एकाधिकार गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। हालंकि इन राजनीतिक-आर्थिक गतिविधियों ने गुजरात के सुल्तानों, बहमनी तथा पुर्तगालियों को वाणिज्यिक हितों और केंद्रों की सुरक्षा के लिए प्रेरित किया।
- पुर्तगाली और निजाम शाह तथा आदिल शाह की सहयोगी सेनाओं के बीच उभरते संघर्ष के कारण 17वीं शताब्दी के मध्य में निजाम शाही शासन समाप्त हो गया और लगभग उसी समय कोंकण क्षेत्र में मराठा शक्ति का विस्तार शुरू हुआ।
- मराठों ने खाड़ी के मुहाने और उसके भीतरी इलाकों में रणनीतिक स्थानों पर किले बनाने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि वे अपने क्षेत्र में प्रवेश करते ही माल को जब्त कर सकें और इस तरह क्षेत्र में व्यापार और वाणिज्य को नियंत्रित कर सकें।
- इन मार्गों की सुरक्षा के लिए, राजमार्गों से सुविधाजनक कनेक्शन के साथ, तट के किनारे छोटे चेक पोस्ट स्थापित किए जाते हैं और यहां तट रक्षकों की तैनाती की जाती है। वास्तव में, किलों की भूमिका अब चेक पोस्टों ने ले ली है, हालांकि इनका उद्देश्य अब भी वही है जो मध्ययुगीन काल में था।

भारत में यूनेस्को विश्व विरासत स्थल

परिचय:

- यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल सूची में 750 से अधिक स्थल शामिल हैं, जो सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित श्रेणियों में विभाजित हैं। 1972 में यूनेस्को के सामान्य सम्मेलन में विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित कन्वेंशन पारित किया गया था, जिसके तहत कुछ स्थानों को मानवता की साझा विरासत माना गया। इस कन्वेंशन का पालन करने वाले राष्ट्र विश्व विरासत स्थलों की पहचान और सुरक्षा के मिशन में एकजुट हैं। भारत में कुल 42 संपत्तियां विश्व विरासत सूची में अंकित हैं।
- **आगरा का किला**
    - ताज महल के उद्यानों के समीप यह 16वीं सदी का महत्वपूर्ण मुगल स्मारक है। लाल बलुआ पत्थर के इस भव्य क़िले में 2.5 कि.मी. लंबी चारदीवारी सहित कई मुगल शासकों के शाही शहर हैं। इसमें से कुछ दर्शनीय महल भी हैं, जैसे कि जहांगीर महल और शाहजहां द्वारा निर्मित खास महल; दर्शक कक्ष जैसे दीवान-ए-खास; और दो बहुत खूबसूरत मस्जिदें आदि।
- **अजंता की गुफाएं**
    - अजंता में पहला बौद्ध गुफा स्मारक दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व का है। गुप्त काल (5वीं और 6ठी शताब्दी ईस्वी) के दौरान कई अन्य गुफाओं को मूल समूह में जोड़ा गया था। अजंता के भित्तिचित्र और मूर्तियां जिन्हें बौद्ध धर्म कला की उत्कृष्ट कृतियां माना जाता है; का कला के क्षेत्र में प्रचुर प्रभाव देखा गया है।

- **नालंदा, बिहार में नालंदा महाविहार का पुरातत्व स्थल**
    - नालंदा महाविहार स्थल उत्तर-पूर्वी भारत में बिहार राज्य में है। इसमें तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 13वीं शताब्दी ईस्वी तक के एक मठवासी और शैक्षिक संस्थान के पुरातात्विक अवशेष शामिल हैं। इसमें स्तूप, मन्दिर, विहार (आवासीय और शैक्षिक भवन) और प्लास्टर, पत्थर और धातु से बनी महत्त्वपूर्ण कलाकृतियां शामिल हैं। नालंदा भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय के रूप में एक है। इस स्थल का ऐतिहासिक विकास, बौद्धमत के एक धर्म के रूप में विकसित होने के साथ-साथ मठवासी और शैक्षिक परंपराओं के विकास का प्रमाण देता है।
- **सांची का बौद्ध स्मारक**
    - भोपाल से लगभग 40 कि.मी. दूर मैदानी इलाके में एक पहाड़ी पर स्थित सांची स्थल में बौद्ध स्मारकों (एक पत्थर के स्तंभ, महल, मन्दिर और मठ) का एक समूह शामिल है, जो संरक्षण की विभिन्न अवस्थाओं में हैं और इनमें से अधिकांश दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के हैं। मौजूदा समय में यह प्राचीनतम बौद्ध स्थल है और 12वीं शताब्दी ईस्वी तक भारत का एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था।
- **चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्व पार्क**
    - यह बिना खुदाई के मौजूद पुरातात्विक, ऐतिहासिक और सजीव सांस्कृतिक विरासत संपत्तियों का समूह है जिसमें प्रागैतिहासिक (ताम्र पाषाण) स्थल, प्राचीन हिंदू राजधानी का एक पहाड़ी किला और गुजरात राज्य की 16 वीं शताब्दी की राजधानी के अवशेष शामिल हैं। इस स्थल में 8वीं से 14वीं शताब्दी के अन्य अवशेषों में दुर्ग, प्रासाद, धार्मिक इमारतें, आवासीय परिसर, कृषि संरचनाएं और जल संरक्षण प्रतिष्ठान भी शामिल हैं। पावागढ़ पहाड़ी के शिखर पर स्थित कालिका माता मन्दिर एक महत्वपूर्ण मन्दिर माना जाता है जहां वर्ष पर्यन्त बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आते हैं। यह स्थल एकमात्र पूर्ण और अपरिवर्तित इस्लामिक मुगल-पूर्व शहर है।
- **छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (पूर्व में विक्टोरिया टर्मिनस)**
    - मुंबई में छत्रपति शिवाजी टर्मिनस जो पहले विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन के नाम से जाना जाता था। यह भारत में विक्टोरियन गोथिक पुनरुद्धार वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें भारतीय पारंपरिक स्थापत्यकला से व्युत्पन्न विषयों का संगम है। ब्रिटिश वास्तुकार एफ डब्ल्यू स्टीवंस द्वारा डिजाइन की गई यह इमारत 'गॉथिक सिटी' और भारत के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक बंदरगाह के रूप में बॉम्बे का प्रतीक बन गई। मध्ययुग के उत्तरार्ध के इतालवी मॉडल पर आधारित उच्च विक्टोरियन गोथिक डिजाइन के अनुरूप टर्मिनल को 1878 में शुरू करके 10 वर्षों में बनाया गया था। इसका उल्लेखनीय पत्थर का गुंबद, बुर्ज, नुकीले मेहराब और विलक्षण भूमि योजना पारंपरिक भारतीय महल वास्तुकला से मिलती जुलती है। यह दो संस्कृतियों के संगम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि ब्रिटिश वास्तुकारों ने भारतीय शिल्पकारों के साथ मिलकर भारतीय वास्तुशिल्प परंपरा और शैली को शामिल करने के लिए काम किया और इस प्रकार बॉम्बे के लिए एक अनूठी नई शैली की स्थापना की।
- **गोवा के चर्च और कॉन्वेंट**
    - पुर्तगाल के अधीन भारत (इंडीज) की पूर्व राजधानी गोवा के चर्च और कॉन्वेंट- विशेष रूप से चर्च ऑफ बॉम जीसस, जिसमें सेंट फ्रांसिस जेवियर की कब्र है- एशिया के ईसाई धर्म प्रचार को दर्शाते हैं। इन स्मारकों ने एशिया के उन सभी देशों में जहां मिशन स्थापित किए गए थे मैनुएलिन, मैनरिस्ट और बरोक वास्तु कला शैलियों के विस्तार में प्रभावी भूमिका अदा की।
- **धोलावीराः एक हड़प्पा शहर**
    - हड़प्पा सभ्यता का दक्षिणी केंद्र, प्राचीन शहर धोलावीरा, गुजरात राज्य में खादिर के शुष्क द्वीप पर है। 3000 से 1500 ईसा पूर्व तक, बसावट वाले इस पुरातात्विक स्थल में, जो दक्षिण पूर्व एशिया में उस काल की सबसे अच्छी संरक्षित शहरी बसावटों में से एक था; एक मजबूत किलेबंदी वाला शहर और कब्रिस्तान मौजूद है। चारदीवारी से घिरे इस शहर को दो मौसमी धाराओं से जल की आपूर्ति होती थी जो इस क्षेत्र का एक दुर्लभ संसाधन है।

  - इस शहर में एक भारी किलेबंदी वाला दुर्ग और समारोह मैदान के साथ-साथ विभिन्न आकार प्रकार की सड़कें और घर हैं जो एक स्तरीकृत सामाजिक व्यवस्था के प्रमाण हैं। एक परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली कठोर वातावरण में जीवित रहने और पनपने के संघर्ष में धोलावीरा के लोगों की सरलता को प्रदर्शित करती है।
  - इस स्थल में एक बड़ा कब्रिस्तान भी है जो मृत्यु के प्रति हड़प्पा के अनूठे दृष्टिकोण के साक्षी हैं। यहां की पुरातात्विक खुदाई के दौरान मनका प्रसंस्करण कार्यशालाएं और विभिन्न प्रकार की तांबा, शंख, पत्थर से बनी कलाकृतियां, अर्ध-कीमती पत्थरों के आभूषण, टेराकोटा, सोना, हाथी दांत और अन्य सामग्री मिली हैं जो संस्कृति की कलात्मक और तकनीकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करती हैं। यहाँ से अन्य हड़प्पा शहरों के साथ-साथ मेसोपोटामिया क्षेत्र और ओमान प्रायद्वीप के शहरों के साथ अंतर क्षेत्रीय व्यापार के साक्ष्य भी मिले हैं।

- **एलिफेंटा गुफाएं**
  - मुंबई के नजदीक एक द्वीप पर 'गुफाओं के शहर' में भगवान शिव से जुड़ी रॉक कट कला का संग्रह है। यहां भारतीय कला को अपनी सबसे बेहतरीन अभिव्यक्ति मिली है खास तौर पर मुख्य गुफा में बनी विशाल ऊंची नक्काशी।
- **एलोरा की गुफाएं:**
  - महाराष्ट्र में औरंगाबाद के समीप एलोरा की गुफाओं में एक ऊंची बेसाल्ट चट्टान की दीवार में अगल बगल खोदे गए 2 कि.मी. से अधिक तक फैले 34 मठ और मन्दिर हैं। अपने 600 ई. से 1000 ई. तक के स्मारकों के निर्बाध अनुक्रम के साथ एलोरा प्राचीन भारतीय सभ्यता को जीवंत करता है। एलोरा परिसर न केवल एक अद्वितीय कलात्मक सृजन और तकनीकी उपलब्धि है, बल्कि बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म को समर्पित अपने मन्दिरों के साथ यह सहिष्णुता की भावना को दर्शाता है जो प्राचीन भारत की विशेषता थी।
- **फतेहपुर सीकरी:**
  - सम्राट अकबर द्वारा 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित फतेहपुर सीकरी (विजय का शहर) केवल लगभग 10 वर्षों तक मुगल साम्राज्य की राजधानी थी। एकसमान स्थापत्य शैली में बने स्मारकों और धर्मस्थलों के परिसर में भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक जामा मस्जिद भी शामिल है।
- **महान जीवंत चोल मन्दिर**
  - महान जीवंत चोल मन्दिरों का निर्माण चोल साम्राज्य के राजाओं द्वारा किया गया था जिसका विस्तार पूरे दक्षिण भारत और पड़ोसी द्वीपों तक था। इस स्थल में 11वीं और 12वीं सदी के तीन भव्य मन्दिर शामिल हैं: तंजावुर में बृहदेश्वर मन्दिर, गंगाईकोंडाचोलीस्वरम में बृहदेश्वर मन्दिर और दारासुरम में ऐरावतेश्वर मन्दिर। राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित गंगाईकोंडाचोलीस्वरम का मन्दिर 1035 में पूरा हुआ था।
  - इसके 53 मीटर के विमान (गर्भगृह शिखर) के आले के समान कोण और भव्य ऊपरी गोलाइयों में गतिशीलता का दृश्य तंजौर के सीधे और ठोस स्तंभ के विपरीत है। दारासुरम का ऐरावतेश्वर मन्दिर परिसर राजराज द्वितीय द्वारा निर्मित किया गया था, और इसमें 24 मीटर का विमान और भगवान शिव की एक पत्थर की मूर्ति विराजमान है। ये मन्दिर वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला एवं कांस्य कला के क्षेत्र में चोलों की उपलब्धि का साक्ष्य प्रदान करते हैं।
- **हम्पी में स्मारकों का समूह**
  - हम्पी का आडंबरहीन भव्य स्थल अंतिम महान हिन्दू साम्राज्य विजयनगर की अंतिम राजधानी थी। इसके बेहद धनाड्य राजकुमार ने द्रविड मन्दिर और महलों का निर्माण कराया था जिसे 14वीं एवं 16वीं शताब्दियों के बीच आने वाले यात्रियों से बड़ी प्रशंसा प्राप्त हुई। 1565 में दक्कन मुस्लिम संघ द्वारा जीत लिए जाने के बाद इसे छोड़े जाने से पूर्व छह महीने तक यहां लूटपाट की गई थी।

- **महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह**
    - पल्लव राजाओं द्वारा स्मारकों के इस समूह की स्थापना 7वीं और 8वीं शताब्दी में कोरोमंडल तट पर चट्टान को तराश कर की गई थी। यह विशेष रूप से अपने रथों (रथों के रूप में मन्दिरों), मंडपों (गुफा स्मारकों), ओपन एयर बेस-रिलीफ जैसे प्रसिद्ध 'गंगा के अवतरण' और भगवान शिव की महिमामंडन के लिए हजारों मूर्तियों वाले मन्दिर परिसर के लिए जाना जाता है।
- **पट्टदकल में स्मारकों का समूह**
    - कर्नाटक में पट्टदकल एक ग्रहणशील कला के उच्च बिंदु को प्रदर्शित करता है जिसने चालुक्य राजवंश के तहत 7 वीं और 8 वीं शताब्दी में उत्तरी और दक्षिणी भारत के वास्तुशिल्प रूपों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण हासिल किया था। नौ हिंदू मन्दिरों की एक प्रभावशाली श्रृंखला के साथ ही एक जैन धर्मस्थल भी वहां देखा जा सकता है। विरुपाक्ष का मन्दिर इस समूह की एक उत्कृष्ट कृति है जिसे 740 ई. में रानी लोकमहादेवी द्वारा दक्षिण के राजाओं पर अपने पति की जीत के उपलक्ष्य में बनवाया गया था।
- **राजस्थान के पर्वतीय क़िले**
    - इस विरासत स्थल में राजस्थान के चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, सवाई माधोपुर, जैसलमेर, जयपुर और झालावाड़ में स्थित छह राजसी क़िले शामिल हैं। किलों की विविध वास्तुकला, कुछ की परिधि 20 किलोमीटर तक फैली हुई, राजपूत रियासतों के सामर्थ्य की गवाही देती है जो 8वीं से 18वीं शताब्दी तक इस क्षेत्र में फली-फूली थीं। रक्षात्मक दीवारों के अंदर प्रमुख शहरी केंद्र, महल, व्यापारिक केंद्र और मन्दिरों सहित अन्य इमारतें हैं जो अक्सर किलेबंदी से पूर्व की हैं और जिनके भीतर एक विस्तृत दरबारी संस्कृति विकसित हुई जो सीखने, संगीत और कला को बढ़ावा देती थी। किलेबंदी में घिरे कुछ शहरी केंद्र बच गए हैं साथ ही स्थल के कई मन्दिर और अन्य पवित्र इमारतें भी बची हुई हैं। किले भू-दृश्यावली जैसे पहाड़ियां, रेगिस्तान, नदियां और घने जंगल द्वारा प्रदान की गयी प्राकृतिक सुरक्षा का उपयोग करते हैं। इनमें व्यापक जल संरक्षण संरचनाएं भी शामिल हैं, जो आज भी बड़े पैमाने पर उपयोग में हैं।
- **अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर**
    - साबरमती नदी के पूर्वी तट पर 15वीं शताब्दी में सुल्तान अहमद शाह द्वारा स्थापित अहमदाबाद का चारदीवारी वाला शहर, सल्तनत काल की एक समृद्ध वास्तुकला विरासत प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से भद्र गढ़, किला शहर की दीवारें और द्वार और कई मस्जिदों और मकबरों के साथ-साथ बाद के समय के महत्वपूर्ण हिंदू और जैन मन्दिर भी। शहरी संरचना गेटेड पारंपरिक सड़कों (पुरा) में पारंपरिक घरों (पोल) की घनी बसावट से बनी है, जिसमें पक्षी को चुगाने की व्यवस्था, सार्वजनिक कुएं और धार्मिक संस्थान जैसी अनूठी विशेषताएं हैं। यह शहर छह शताब्दियों से वर्तमान समय तक गुजरात राज्य की राजधानी के रूप में फलता-फूलता रहा।
- **हुमायूं का मकबरा, दिल्ली**
    - 1570 में बना यह मकबरा विशेष सांस्कृतिक महत्त्व का है क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान मकबरा था। इसने कई प्रमुख वास्तुशिल्प नवाचारों को प्रेरित किया, जिसकी परिणति ताज महल के निर्माण में हुई।
- **जयपुर शहर, राजस्थान**
    - भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्य राजस्थान में जयपुर के चारदीवारी वाले शहर की स्थापना 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी। पहाड़ी इलाकों में स्थित क्षेत्र के अन्य शहरों के विपरीत जयपुर को मैदानी इलाके में निर्मित किया गया था और वैदिक वास्तुकला के आलोक में परिभाषित ग्रिड योजना के अनुसार बनाया गया था। सड़कों के किनारे बनी निरंतर स्तंभयुक्त दुकानों में व्यवसाय होता है और ये सड़कें केंद्र में एक दूसरे को काटती हैं जिससे बड़े सार्वजनिक चौराहे बनते हैं जिन्हें चौपड़ कहा जाता है। मुख्य सड़कों के किनारे बने बाज़ारों, दुकानों, आवासों और मन्दिरों का अग्रभाग एक समान है। जयपुर की शहरी योजना प्राचीन हिंदू और प्रारंभिक आधुनिक मुगल के साथ-साथ पश्चिमी संस्कृतियों के विचारों के आदान-प्रदान को दर्शाती है। ग्रिड योजना पश्चिम में प्रचलित मॉडल है जबकि विभिन्न शहर

क्षेत्रों (चौकड़ी) की व्यवस्था पारंपरिक हिंदू अवधारणाओं को इंगित करती है। एक व्यावसायिक राजधानी बनने के लिए डिज़ाइन किए गए इस शहर ने आज तक अपनी स्थानीय वाणिज्यिक, शिल्पकारी और सहकारी परंपराओं को बरकरार रखा है।

- **काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मन्दिर, तेलंगाना**
    - रुद्रेश्वर, जिसे रामप्पा मन्दिर के नाम से जाना जाता है, तेलंगाना राज्य में हैदराबाद से लगभग 200 कि.मी. उत्तर-पूर्व में पालमपेट गांव में स्थित है। यह काकतीय काल (1123-1323 ई. पू.) के शासकों रुद्रदेव और रेचरला रुद्र के अधीन निर्मित एक दीवार वाले परिसर में स्थित मुख्य शिव मन्दिर है। बलुआ पत्थर से बने इस मन्दिर का निर्माण 1213 ई. में शुरू हुआ और माना जाता है कि यह लगभग 40 वर्षों तक चलता रहा। यह इमारत सजावटी बीमों और नक्काशीदार ग्रेनाइट और डोलराइट स्तंभों से सुसज्जित है। इमारत में एक विशिष्ट और पिरामिडनुमा विमान (क्षैतिज सीढ़ीदार टावर) है जो हल्की झरझरा ईंटों तथाकथित 'फ्लोटिंग ईंटों' से बना है. जिसका उद्देश्य छत संरचनाओं के वजन को कम करना है। मन्दिर की उच्च कोटि की कलात्मक मूर्तियां क्षेत्रीय नृत्य रीति-रिवाजों और काकतीय संस्कृति को दर्शाती हैं। वन क्षेत्र की तलहटी में और कृषि क्षेत्रों के बीच और काकतीय निर्मित जल भंडार रामप्पा चेरुवु के तट के करीब, इस मन्दिर का निर्माण धार्मिक ग्रंथों में अनुमोदित विचारधारा और प्रथा का पालन करता है कि मन्दिरों को पहाड़ियों, जंगलों, झरनों, झीलों, जलग्रहण क्षेत्रों और कृषि भूमि सहित प्राकृतिक दृश्यावली का एक अभिन्न अंग बनाने के लिए निर्मित किया जाना चाहिए।
- **खजुराहो स्मारक समूह**
    - खजुराहो में मन्दिरों का निर्माण चंदेल राजवंश के दौरान किया गया था जो 950 और 1050 के बीच अपने चरम पर पहुंच गया था। अब केवल 20 मन्दिर ही बचे हैं; वे तीन अलग-अलग समूहों में हैं और दो अलग-अलग धर्मों से संबंधित हैं हिंदू धर्म और जैन धर्म। वे वास्तुकला और मूर्तिकला के बीच एक आदर्श संतुलन बनाते हैं। कंदरिया का मन्दिर प्रचुर मात्रा में मूर्तियों से सज्जित है जो भारतीय कला की सबसे महान कृतियों में गिनी जाती हैं।
- **बोधगया में महाबोधि मन्दिर परिसर**
    - महाबोधि मन्दिर परिसर भगवान बुद्ध के जीवन और विशेष रूप से ज्ञान प्राप्ति से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है। पहला मन्दिर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा बनाया गया था और वर्तमान मन्दिर 5वीं या 6ठी शताब्दी का है। यह पूरी तरह से ईंटों से निर्मित सबसे पुराने बौद्ध मन्दिरों में से एक है जो भारत में गुप्त काल के अंत से आज तक अपना गौरवपूर्ण अस्तित्व कायम रखे हुए हैं।
- **भारत की पर्वतीय रेलवे**
    - इस स्थल में तीन रेलवे शामिल हैं। दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे पर्वतीय यात्री रेलवे का सर्व प्रथम और अब तक का भी सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। 1881 में आरम्भ इस रेलवे के डिज़ाइन में मनोरम पहाड़ी इलाके में एक प्रभावी रेल लिंक स्थापित करने की समस्या से निपटने के लिए साहसिक और नायाब इंजीनियरिंग समाधान शामिल हैं। तमिलनाडु राज्य में 46 किलोमीटर लंबे मीटर गेज सिंगल-ट्रैक रेलवे नीलगिरि माउंटेन रेलवे का निर्माण पहली बार 1854 में प्रस्तावित किया गया था लेकिन पहाड़ी स्थान की कठिनाई के कारण 1891 में काम शुरू हुआ और 1908 में पूरा हुआ। 326 मीटर से 2,203 मीटर की ऊंचाई तय करने वाली यह रेलवे उस समय की नवीनतम तकनीक दर्शाती थी। कालका शिमला रेलवे 96 किलोमीटर लंबा, सिंगल ट्रैक वर्किंग रेल लिंक है जिसे 19वीं शताब्दी के मध्य में शिमला के ऊंचे पहाड़ी शहर को सेवा प्रदान करने के लिए बनाया गया था जो रेलवे के माध्यम से पहाड़ी आबादी को विस्थापित करने के तकनीकी और भौतिक प्रयासों का प्रतीक है। तीनों रेलवे अभी भी पूरी तरह चालू हैं।
- **कुतुब मीनार और उसके स्मारक, दिल्ली**
    - 13वीं सदी की शुरुआत में दिल्ली से कुछ किलोमीटर दक्षिण में निर्मित कुतुब मीनार की लाल बलुआ पत्थर की मीनार 72.5 मीटर ऊंची है, जो अपने शिखर पर 2.75 मीटर व्यास से लेकर आधार पर 14.32 मीटर तक है और इसमें कोणीय

और गोल नलिकाएं बारी-बारी से बनी हैं। आसपास के पुरातात्विक क्षेत्र में दफन इमारतें हैं विशेष रूप से शानदार अलाई दरवाज़ा गेट, जो इंडो-मुस्लिम कला की उत्कृष्ट कृति है (1311 में निर्मित) और दो मस्जिदें, जिनमें कुव्वतुल इस्लाम भी शामिल है जो उत्तरी भारत में सबसे पुरानी है।

- **रानी-की-वाव (रानी की बावड़ी), पाटण, गुजरात**
  - सरस्वती नदी के तट पर निर्मित रानी-की-वाव शुरुआत में 11 वीं शताब्दी ईस्वी में एक राजा के स्मारक के रूप में बनाया गया था। बावड़ियां भारतीय उपमहाद्वीप पर भूमिगत जल संसाधन और भंडारण प्रणालियों का एक विशिष्ट रूप हैं और तीसरी सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व से इनका निर्माण किया जा रहा है। इनका स्वरूप समय के साथ मूल रूप से रेतीली मिट्टी में एक गड्ढे से कला और वास्तुकला के विस्तृत बहुमंजिला निर्माणों में विकसित हुआ। रानी-की-वाव बावड़ी निर्माण और मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली में कारीगरों के बेहतरीन कौशल का परिणाम है जो इस जटिल तकनीक में हासिल महारत और बारीकियों व अनुपात का अनुपम सौन्दर्य दर्शाता है। जल की पवित्रता को उजागर करने वाले एक उल्टे मन्दिर के रूप में डिज़ाइन की गयी इस बावड़ी को उच्च कलात्मकता वाले मूर्तिकला पैनलों के साथ सीढ़ियों के सात स्तरों में विभाजित किया गया है; 500 से अधिक प्रमुख मूर्तियां और एक हजार से अधिक छोटी मूर्तियां धार्मिक, पौराणिक और लौकिक छवियों को प्रदर्शित करती हैं जो अक्सर साहित्यिक कृतियों का उल्लेख करती हैं। चौथा स्तर सबसे गहरा है और 9.5 मीटर x 9.4 मीटर, 23 मीटर की गहराई पर एक आयताकार टैंक में जाता है। कुआं इसके सबसे पश्चिमी छोर पर स्थित है और इसमें 10 मीटर व्यास वाला 30 मीटर गहरा शाफ्ट है।
- **लाल किला परिसर**
  - लाल किला परिसर को शाहजहानाबाद के महल किले के रूप में बनाया गया था- भारत के पांचवें मुगल सम्राट शाहजहां की नई राजधानी। इसका नाम लाल बलुआ पत्थर की विशाल चारदीवारी के कारण रखा गया है। यह 1546 में इस्लाम शाह सूरी द्वारा निर्मित एक पुराने किले सलीमगढ़ के निकट है जिसके साथ मिल कर यह लाल किला परिसर का निर्माण करता है। निजी प्रकोष्ठों में एक निरंतर प्रवाहमान जल चैनल से जुड़े मंडपों की एक पंक्ति शामिल है. जिसे नहर-ए-बहिश्त (स्वर्ग की धारा) के रूप में जाना जाता है। लाल किला को मुगल रचनात्मकता के चरम का प्रतिनिधित्व करने वाला माना जाता है, जिसे शाहजहां के शासनकाल में परिष्करण के एक नए स्तर पर लाया गया था। किले की योजना इस्लामी प्रोटोटाइप पर आधारित है लेकिन प्रत्येक मंडप मुगल इमारत के विशिष्ट वास्तुशिल्प तत्वों को दर्शाता है जो फारसी, तिमुरिड और हिंदू परंपराओं का मिश्रण है। लाल किले की अभिनव योजना और वास्तुकला शैली जिसमें उद्यान डिजाइन भी शामिल है ने राजस्थान, दिल्ली, आगरा और अन्य क्षेत्रों में इमारतों और उद्यानों के निर्माण को बेहद प्रभावित किया।
- **भीमबेटका के शैलाश्रय**
  - भीमबेटका के शैलाश्रय मध्य भारतीय पठार के दक्षिणी छोर पर विंध्य पर्वत की तलहटी में हैं। विशाल बलुआ पत्थर की चट्टानों के भीतर घने जंगल के ऊपर प्राकृतिक शैलाश्रयों के पांच समूह हैं जो मेसोलिथिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक की कलाकृतियां प्रदर्शित करते हैं। स्थल से सटे इक्कीस गांवों के निवासियों की सांस्कृतिक परंपराएं शैल चित्रों में दर्शाई गई परंपराओं से काफी मिलती-जुलती हैं।
- **होयसलों की पवित्र मण्डली**
  - इस क्रमिक स्थल में 12वीं से 13वीं शताब्दी तक के दक्षिणी भारत में होयसला शैली के मन्दिर परिसरों के तीन सबसे प्रतिनिधि उदाहरण शामिल हैं। होयसला शैली की सृजना पड़ोसी राज्यों से अलग पहचान बनाने के लिए समकालीन मन्दिर विशेषताओं और अतीत की विशेषताओं के सावधानीपूर्वक चयन के माध्यम से की गयी थी। मन्दिरों की विशेषता अति-वास्तविक मूर्तियां और पत्थर की नक्काशी है जो संपूर्ण वास्तुशिल्प सतह पर मौजूद है, एक परिक्रमा वेदिका, विशाल मूर्तिकला वीथि, एक बहु-स्तरीय चित्रवल्लरी और साल किंवदंती से सम्बंधित मूर्तियां हैं। मूर्तिकारी

कला की उत्कृष्टता इन मन्दिर परिसरों की कलात्मक उपलब्धि को रेखांकित करती है जो हिंदू मन्दिर वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास में एक महत्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करती है।

- **शांति निकेतन**
  - प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा 1901 में ग्रामीण पश्चिम बंगाल में स्थापित शांतिनिकेतन एक आवासीय विद्यालय और प्राचीन भारतीय परंपराओं और धार्मिक और सांस्कृतिक सीमाओं से परे मानवता की एकता की दृष्टि पर आधारित कला का केंद्र था। मानवता की एकता या 'विश्व भारती' को मान्यता के रूप में 1921 में शांतिनिकेतन में एक 'विश्व विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई। 20वीं सदी की शुरुआत के प्रचलित ब्रिटिश औपनिवेशिक वास्तुशिल्पीय नजरियों और यूरोपीय आधुनिकतावाद से अलग शांतिनिकेतन पूरे क्षेत्र की प्राचीन, मध्ययुगीन और लोक परंपराओं पर आधारित एक अखिल एशियाई आधुनिकता की ओर उन्मुख पद्यतियों का प्रतिनिधित्व करता है।
- **सूर्य मन्दिर, कोणार्क**
  - बंगाल की खाड़ी के तट पर उगते सूरज की किरणों से नहाया हुआ, कोणार्क का मन्दिर सूर्य देवता के रथ का एक स्मारकीय प्रतीक है; इसके 24 पहिये प्रतीकात्मक डिजाइनों से सज्जित हैं और इसका नेतृत्व छह अश्वों का दल करता है।
- **ताज महल**
  - आगरा में 1631 और 1648 के बीच मुगल बादशाह शाहजहां के आदेश से अपनी चहेती बेगम की याद में बनाया गया सफेद संगमरमर का एक विशाल मकबरा, ताज महल भारत में मुस्लिम कला का चरमोत्कर्ष है और विश्व विरासत के सार्वभौमिक रूप से प्रशंसित उत्कृष्ट कृतियों में से एक है।
- **जंतर-मंतर, जयपुर**
  - जयपुर में जंतर-मंतर, 18वीं शताब्दी की शुरुआत में बनाया गया एक खगोलीय अवलोकन स्थल है। इसमें लगभग 20 मुख्य स्थिर उपकरणों का एक सेट शामिल है। वे ज्ञात उपकरणों की चिनाई के स्मारकीय उदाहरण हैं लेकिन कई मामलों में उनकी अपनी खास विशेषताएं हैं। खुली आंखों से खगोलीय स्थितियों के अवलोकन के लिए डिज़ाइन किए गए वे कई वास्तुशिल्प और यंत्रीय नवाचारों का प्रतीक हैं। यह भारत की ऐतिहासिक वेधशालाओं में सबसे महत्वपूर्ण, सबसे व्यापक और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित है। यह मुगल काल के अंत में एक विद्वान राजकुमार के दरबार के खगोलीय कौशल और ब्रह्माण्ड संबंधी अवधारणाओं की अभिव्यक्ति है।
- **मुंबई का विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको इमारत समूह**
  - वैश्विक व्यापार केंद्र बनने के बाद, मुंबई शहर ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक महत्वाकांक्षी शहरी नियोजन परियोजना लागू की। इसके नतीजन ओवल मैदान के खुले स्थान की सीमा से लगे सार्वजनिक भवनों के निर्माण हुआ, पहले विक्टोरियन नियो-गॉथिक शैली में और फिर 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में आर्ट डेको शैली में। विक्टोरियन शैली में बालकनियां और बरामदे सहित जलवायु के अनुकूल भारतीय तत्व शामिल हैं। आर्ट डेको इमारतें अपने सिनेमाघरों और आवासीय भवनों के साथ भारतीय डिजाइन को आर्ट डेको इमेजरी के साथ मिश्रित करती हैं जिससे एक अनूठी शैली बनती है जिसे इंडो-डेको के रूप में वर्णित किया गया है। ये दोनों समूह आधुनिकीकरण के उन चरणों के साक्ष्य हैं जिनसे मुंबई 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान गुजरा है।
- **ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क संरक्षण क्षेत्र (जीएचएनपीसीए)**
  - उत्तरी भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश में हिमालय पर्वत के पश्चिमी भाग में स्थित इस राष्ट्रीय उद्यान की विशेषता ऊंची अल्पाइन चोटियां, अल्पाइन घास के मैदान और नदियों वाले जंगल हैं। 90,540 हेक्टेयर क्षेत्र में कई नदियों के ऊपरी पर्वतीय हिमनदी और बर्फ पिघलने से बने जल के स्रोत और जल आपूर्ति के जलग्रहण क्षेत्र मौजूद हैं जो निचले क्षेत्र में लाखों उपयोगकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण हैं। जीएचएनपीसीए हिमालय की अग्रिम श्रृंखलाओं के मानसून प्रभावित

जंगलों और अल्पाइन घास के मैदानों की रक्षा करता है। यह हिमालय जैव विविधता हॉटस्पॉट का हिस्सा है और इसमें पच्चीस प्रकार के वनों के साथ-साथ जीव-जंतुओं की प्रजातियों का एक समृद्ध समूह शामिल है जिनमें से कई विलुप्त होने की कगार में हैं। यह विशिष्टता इस स्थल को जैव विविधता संरक्षण के लिए अति महत्वपूर्ण बनाता है।

- **काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान**
  - असम के बीचों-बीच यह राष्ट्रीय उद्यान पूर्वी भारत के उन अंतिम क्षेत्रों में से एक है जो मानव की मौजूदगी से अछूता है। यहां एक सींग वाले गैंडों की दुनिया की सबसे बड़ी आबादी के साथ-साथ बाघ, हाथी, तेंदुआ और भालू सहित कई स्तनधारी और हजारों पक्षी रहते हैं।
- **केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान**
  - महाराजाओं का यह पूर्व बत्तख शिकार रिजर्व अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन और साइबेरिया से बड़ी संख्या में जलीय पक्षियों के लिए प्रमुख शीतकालीन प्रवास क्षेत्रों में से एक है। यहां दुर्लभ साइबेरियन क्रेन सहित पक्षियों की लगभग 364 प्रजातियां दर्ज की गई हैं।
- **मानस वन्यजीव अभयारण्य**
  - हिमालय की तलहटी में एक हल्की ढलान पर जहां जंगल वाली पहाड़ियां कछारी घास के मैदानों और उष्णकटिबंधीय जंगलों में बदल जाती हैं मानस अभयारण्य वन्यजीवों की एक विशाल विविधता संजोये है, जिसमें बाघ, पिग्मी हॉग, भारतीय गैंडा और भारतीय हाथी जैसी कई लुप्तप्राय प्रजातियां शामिल हैं।
- **नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान**
  - पश्चिम हिमालय क्षेत्र में ऊंचाई पर स्थित भारत का फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान अपने स्थानिक अल्पाइन फूलों के घास के मैदानों और मनोरम प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह समृद्ध विविधता वाला क्षेत्र दुर्लभ और लुप्तप्राय जानवरों का भी वास स्थल है जिनमें एशियाई काला भालू, हिम तेंदुआ, भूरा भालू और नीली भेड़ शामिल हैं। फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान की सौम्य दृश्यावली नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के बीहड़ पहाड़ी जंगल की पूरक है। साथ मिलकर वे ज़ांस्कर और महान हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच एक अद्वितीय परिवर्तन क्षेत्र की रचना करते हैं जिसे पर्वतारोहियों और वनस्पतिशास्त्रियों द्वारा एक शताब्दी से अधिक और हिंदू पौराणिक कथाओं में बहुत लंबे समय तक सराहा गया है।
- **सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान**
  - सुंदरवन गंगा डेल्टा में 10,000 कि.मी. भूमि और जल (इसका आधे से अधिक भारत में, शेष बांग्लादेश में) में फैला है। इसमें दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र शामिल है। उद्यान में बाघ, जलीय स्तनधारी, पक्षी और सरीसृप सहित कई दुर्लभ या लुप्तप्राय प्रजातियां रहती हैं।

- **मानस वन्यजीव अभयारण्य**
  - हिमालय की तलहटी में एक हल्की ढलान पर जहां जंगल वाली पहाड़ियां कछारी घास के मैदानों और उष्णकटिबंधीय जंगलों में बदल जाती हैं मानस अभयारण्य वन्यजीवों की एक विशाल विविधता संजोये है, जिसमें बाघ, पिग्मी हॉग, भारतीय गैंडा और भारतीय हाथी जैसी कई लुप्तप्राय प्रजातियां शामिल हैं।
- **नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान**
  - पश्चिम हिमालय क्षेत्र में ऊंचाई पर स्थित भारत का फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान अपने स्थानिक अल्पाइन फूलों के घास के मैदानों और मनोरम प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह समृद्ध विविधता वाला क्षेत्र दुर्लभ और लुप्तप्राय जानवरों का भी वास स्थल है जिनमें एशियाई काला भालू, हिम तेंदुआ, भूरा भालू और नीली भेड़ शामिल हैं। फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान की सौम्य दृश्यावली नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के बीहड़ पहाड़ी जंगल की पूरक है। साथ मिलकर वे ज़ांस्कर और महान हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच एक अद्वितीय परिवर्तन क्षेत्र की रचना करते हैं जिसे

पर्वतारोहियों और वनस्पतिशास्त्रियों द्वारा एक शताब्दी से अधिक और हिंदू पौराणिक कथाओं में बहुत लंबे समय तक सराहा गया है।

- **सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान**
    - सुंदरवन गंगा डेल्टा में 10,000 कि.मी. भूमि और जल (इसका आधे से अधिक भारत में, शेष बांग्लादेश में) में फैला है। इसमें दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र शामिल है। उद्यान में बाघ, जलीय स्तनधारी, पक्षी और सरीसृप सहित कई दुर्लभ या लुप्तप्राय प्रजातियां रहती हैं।
- **पश्चिमी घाट**
    - हिमालय पर्वत से भी पुरानी पश्चिमी घाट की पर्वत श्रृंखला अद्वितीय जैव-भौतिकीय और पारिस्थितिक प्रक्रियाओं के साथ अत्यधिक महत्व की भू-आकृति संबंधी विशेषताओं को दर्शाती है। स्थल के उच्च पर्वतीय वन पारिस्थितिकी तंत्र भारतीय मानसून मौसम पैटर्न को प्रभावित करते हैं। क्षेत्र की उष्णकटिबंधीय जलवायु को नियंत्रित करते हुए यह स्थल पृथ्वी पर मानसून प्रणाली का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसमें असाधारण रूप से उच्च स्तर की जैविक विविधता और स्थानिकता है और इसे जैविक विविधता के दुनिया के आठ 'सबसे असाधारण हॉटस्पॉट' में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। यहां के जंगलों में गैर-भूमध्यरेखीय उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों की कुछ बेहतरीन प्रजातियां शामिल हैं और यह कम-से-कम 325 विश्व स्तर पर संकटग्रस्त वनस्पतियों, जीवों, पक्षी, उभयचर, सरीसृप और मछली प्रजातियों का घर हैं।
- **कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान**
    - उत्तरी भारत (सिक्किम राज्य) में हिमालय श्रृंखला के केंद्र में स्थित, कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान में मैदानों, घाटियों, झीलों, ग्लेशियरों और प्राचीन जंगलों से ढके शानदार हिमाच्छादित पहाड़ों की एक अनूठी विविधता शामिल है और इसमें माउंट कंचनजंगा नामक दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी भी शामिल है। पौराणिक कहानियां इस पर्वत और बड़ी संख्या में मौजूद प्राकृतिक तत्वों (गुफाओं, नदियों, झीलों आदि) से जुड़ी हुई हैं जिन्हें सिक्किम के मूल निवासियों द्वारा पूजा जाता है। इन कहानियों और प्रथाओं के पावन अर्थों को बौद्ध मान्यताओं के साथ एकीकृत किया गया है और ये सिक्किमी पहचान का आधार हैं।